ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 211-215
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

21वीं सदी में भारत की सुरक्षा पर चीन का बढ़ता प्रभाव

अमित कुमार सिंह
शोध अध्येता– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-20.09.2023, Revised-23.09.2023, Accepted-27.09.2023 E-mail: asrajpur72@gmail.com

सारांश: ***भारत और चीन विश्व की दो सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। प्राचीन काल मे राजनीतिक सम्बन्ध न होने के बावजूद इन दो देशों के बीच महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे है। बौद्ध धर्म जिसका प्रादुर्भाव भारत में हुआ और जिसका प्रसार चीन में हुआ ने भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने मे प्रमुख भूमिका निभाई 165 ईसवी सन् मे कश्यप भंगत और धर्मरत्न जैसे भारतीय बौद्ध भिक्षुओं ने चीन की यात्रा की। चीन मे बौद्ध धर्म के संवर्द्धन मे वहां के तांग वंश ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। कई चीनी बौद्ध विद्वान जैसे फाह्यन, ह्वेनसांग और इत्सिंग ने भारत की यात्रा की। उनके पूर्व भी चीनी व्यापारी दक्षिण–पश्चिम चीन से उत्तरी भारत आया करते थे। चीनी यात्रियों ने रेशम, सिन्दूर इत्यादि को भारत मे लोकप्रिय बनाया। इन दोनों देशों के बीच प्राचीन रेशम मार्ग से व्यापारिक लेन–देन होता रहा।***

कुंजीभूत शब्द– संवेगात्मक बुद्धि, उद्देश्य, विद्यार्थि अध्ययन, आवर्तो, घोषणात्मक शोध परिकल्पना, इण्टरमीडिएट स्तर, विज्ञान वर्ग।

भारत और चीन के बीच 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे पुनः ऐसे समय सम्बन्ध स्थापित हुआ। जब दोनो देश पश्चिमी उपनिवेशवाद की मार झेल रहे थे। महान भारतीय कबि गुरू रविन्द्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1924 मे चीन की यात्रा की थी। 1930 के दशक मे जब चीन और जापान के बीच युद्ध के दौरान भारत से एक पांच सदस्यीय चिकित्सा मिशन चीन भेजा गया था। डॉ0 कोटनिस द्वारा चीनी रोगियो को प्रदान की गयी। चिकित्सकीय सहायता का इतना प्रभाव पड़ा कि चीनी आज भी उसे याद करते है। भारत और चीन के बीच पिछले आधे दशक के दौरान राजनीतिक सम्बन्ध काफी उतार–चढ़ाव और जद्दोजहद से होकर गुजरे है। किंतु वे आज लगातार सौहादपूर्ण हो रहे है। चीनी क्रांति के बाद भारत गैर–समाजवादी देशों मे दूसरा ऐसा राष्ट्र बना जिसने चीनी गणराज्य को 30 दिसम्बर 1949 को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्रदान की। इन दोनों देशो के बीच 1 अप्रैल 1950 को राजनयिक सम्बन्ध भी स्थापित हुए।

सन् 1950 मे ही तिब्बत मे चीन की घुसपैठ ने दोनो देशो के मध्य कड़वाहट को जन्म दिया। भारत के प्रथम प्रधान–मंत्री जवाहरलाल नेहरू उत्तर –औपनिवेशक एशिया मे चीन व भारत की वृहत्तर भूमिका के निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध थे। तिब्बत सम्बन्धी मुद्दों के समाधान से पंचशील के सिद्धांतों का जन्म हुआ। एक दूसरे की क्षेत्रीय एकता तथा सम्प्रभुता के प्रति परस्पर सम्मान, परस्पर अनाक्रमण, एक दूसरे के आन्तरिक मामलो मे परस्पर अहस्त्र क्षेत्र, परस्पर समानता, और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व।[1]

तिब्बत मे निरन्तर अशान्ति तथा भारत व चीन के मध्य सीमा सम्बन्धी विवाद ने उग्र राष्ट्रवाद को जन्म दिया जो माओ के विचारो मे व्यक्त हो रहा था। 1959 मे दलाई लामा के भारत आगमन के पश्चात् चीन को इस तथ्य को समझने मे अनेक वर्ष लगे कि दलाई लामा को भारत मे शरण देना मात्र मानवीय दृष्टिकोण का प्रतीक था न कि किसी राजनीतिक अथवा तिब्बत से सम्बन्धित कोई अन्य कारक से प्रेरित था। 1959 से दो दशको तक भारत–चीन सम्बन्धों का इतिहास सीमा–विवादों, सशस्त्र संघर्ष तथा शुत्रतापूर्ण रहा।

1955 में ही भारतीय सीमा पर चीन कार्यावाही तेज हो गयी। अप्रैल, 1954 में चीनी सैनिक दम जान बंगाल में शिपकी दर्रा, हुपसंग, खुर्द में अनाधिकार रूप में घुस आये। 1957 में चीनी टुकड़ी लोहित डिवीजन में आयी। जुलाई, 1958 में लद्दाख के खुरनाक किले पर कब्जा किया। इन गतिविधियों को भारत सरकार जानती थी, पर भारत की जनता नही। जनता ने विरोधी कार्यवाही की मांग की तो भारत ने विरोध व्यक्त किया। दोनों देशों के मध्य तनाव बढ़ा। इसी कालान्तर में तिब्बत में विरोध हुआ। दलाई लामा भारतीय शरण में आये। 23 जनवरी, 1959 को चीन ने विरोध पत्र भेजा और कहा कि सीमा निर्धारण नहीं हुआ है, इसलिए मैकमोहन रेखा गैर कानूनी है। 20 अक्टूबर, 1959 को चीनी सेनाएं लद्दाख में चालीस मील दक्षिण की ओर के दर्रे से घुस आयी और भारतीय सैनिकों को मारा। उन सब घटनाओं को लेकर वार्ताएं हुई। भारत की जनता ने सैनिक कार्यवाही की मांग की। परन्तु पं0 नेहरू ने इंकार कर दिया। क्योंकि पं0 नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्ण तरीको से सुलझाना चाहते थे। दिसम्बर, 1959 को पं0 नेहरू ने चाऊ एन लाई को गलत मानचित्रों का जिक्र करते हुए चीन के दावों को अस्वीकार करते हुए एक पत्र लिखा। 5 जनवरी, 1960 को दिल्ली में सीमा विवाद पर एक वार्ता हुई। चीन का यह कूटनीतिक आचरण था। उसके द्वारा ऐसे मानचित्र प्रस्तुत किये गये, जिसमें भारत, भूटान के कई प्रदेश चीन सीमांतर्गत दर्शाए गए थे। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यह कोई अजूबा नहीं था। भारत के लिए जब तिब्बत समस्या पैदा हुई, तभी भारत की सीमा–विवाद का प्रश्न उठाना था। भारत ने न केवल उसे भविष्य के लिए छोड़ दिया अपितु तिब्बत के संबंध मे अविवेकपूर्ण अदूरदर्शिता अपनाकर सैनिक संघर्ष समझौते एवं वार्ताओं में अपनी स्थिति को कमजोर बना दिया।

अक्टूबर 1962 का भारत–चीन युद्ध कोई आकस्मिक घटना नही थी। यह सब उन घटनाओं की चरम परिणति थी, जो विगत वर्षो से और विशेषकर तिब्बत संकट के बाद देखने में आयी थी। चीन द्वारा मैकमोहन लाइन को अस्वीकार करना और अपने दावे को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में प्रतिस्थापित करना, इस युद्ध का उद्देश्य था। चीन ने 20 अक्टूबर, 1962 को नेफा क्षेत्र (नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी) में हजारों मील दूर लद्दाख पर हमला किया। 25 अक्टूबर को मैकमोहन रेखा से दक्षिण में तवांग पर 16 अक्टूबर को असम के मैदानों में, उत्तर मे तराई के कस्बे के पास तक और 18 नवम्बर को वालोंग पर आक्रमण किया। इतना होने के बावजूद दोनों देशों ने औपचारिक रूप से युद्ध की घोषणा नहीं की।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

भारतीय चौकियों पर आक्रमण के बाद 26 अक्टूबर, 1962 को चीन ने भारत सरकार के समक्ष वार्ता का एक प्रस्ताव रखा था। प्रस्ताव इस प्रकार था :–

1. भारत–चीन के बीच वास्तविक सीमा रेखाओं से दोनों पक्षों की सेनाएं 20–20 किमी0 दूर रहें।
2. भारत सरकार यह स्वीकार न करे तो मध्य और पश्चिम क्षेत्र की परम्परागत रेखा का उल्लंघन नही किया जायेगा।
3. समस्या का समाधान शांतिपूर्ण तरीके से किया जायेगा।

भारत ने इस इस त्रिपक्षीय प्रस्ताव को भारत को धोखा देने वाली चाल कहकर अस्वीकार कर दिया। भारत ने कहा कि वार्ता तभी हो सकती है जब चीन यदि नेफा में अपनी आक्रमण सेनाओं को मैकमोहन रेखा से उत्तर से हटा ले और चीनी सेनाएं 8 सितम्बर, 1962 तक पहले वाली स्थिति में आ जाये। पर चीन ने भारत के प्रस्तावों को नहीं माना।

चीन ने 21 नवम्बर, 1962 को एक तरफा युद्ध–विराम की घोषणा कर दी और कहा कि 1 दिसम्बर से चीनी फौजे वापस हटेंगी तथा 7 नवम्बर तक की नियंत्रण रेखा में लौट सकेंगी। इस पर भारत ने कहा कि चीन को 8 सितम्बर, 1962 वाली स्थिति मे अपनी सेनाएं बुलानी चाहिए। एकपक्षीय युद्ध विराम के कोई स्पष्ट कारण तो नहीं थे पर अन्दाजा लगाया जाता है कि चीन, एशिया में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता था। बांडुग सम्मेलन मे एशियाई अफ्रीकी राष्ट्रों मे भारत की प्रतिष्ठा को कम करना था युद्ध होने से चीन को लगा कि वह अपने उद्देश्यों में सफल हुआ हैं। दूसरा कारण यह माना जाता था कि युद्ध के कारण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जनमत, चीन विरोधी हो गया था तथा भारत को पश्चिमी देशों अमेरिका, ब्रिटेन से सैनिक सहायता मिलने लगी थी। तीसरा कारण, चीन का अनुमान गलत निकला था। चीन ने सोचा था कि विश्व की दोनो शक्तियां अमेरिका और रूस, क्यूबा समस्या में उलझी रहेगी वे भारत–चीन विवाद मे नहीं फसेगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

विश्व के विभिन्न राष्ट्रों ने अपनी–अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। अमेरिका ने चीन की आचोलना की और इसे नव चीनी साम्राज्यवाद की संज्ञा दी। ब्रिटेन की साम्रज्ञी एलिजाबेथ ने आक्रमण को अच्छा नही बताया। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, कनाडा ने भारत को सैनिक सहायता दी। सोवियत संघ ऐसे समय मित्र और भाई के चुनाव में उलझ रहा था। बाद में भारत का साथ दिया। पाकिस्तान भारत विरोधी था। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकार्णो उदासीन रहे पर चीन का समर्थन किया। मिस्र के नासिर, युगोस्लाविया के टीटो, घाना के एनक्रमों ने भारत का खुलकर साथ नहीं दिया। भारत चीन युद्ध में भारत की पराजय के कारण युद्ध के निम्नलिखित परिणाम निकले –

– पं जवाहर लाल नेहरू का अनुमान था कि चीन भारत मैत्री अटूट है, गलत निकला तथा पंचशील के सिद्धांत निराधार रहे।
– श्री कृष्ण मेनन जब रक्षा मंत्री बने तो आक्रमण की सम्भावनाये बढ़ रही थी। भारतीय सेना में असंतोष की भावना व्याप्त थी।
– भारतीय सेना को पहाड़ों पर लड़ने का प्रशिक्षण नहीं दिया गया था। सैनिक उपकरणों की उपेक्षा तथा पर्याप्त धन न मिलना, हमारी हार का महत्वपूर्ण कारण था। इसके अलावा आधुनिक शस्त्रास्त्रों और अन्य सामानों की कमी।
– यातायात में कठिनाइयां तथा सेना को कुछ गलत नक्शे दिया जाना
– सीमा पर कुशल नेतृत्व की कमी।
– स्थानीय सेना की रक्षा के लिए वायु सेना का उपयोग न करना।
– कमजोर गुप्तचर व्यवस्था के कारण भारत युद्ध में हारा।

भारत–चीन युद्ध के परिणामस्वरूप भारत के नेतृत्व को गहरा आघात लगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में खासकर एशिया में भारत की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा। भारत की परिस्थिति की विवशता के कारण उसे पश्चिमी राष्ट्रों की ओर झुकना पड़ा। भारत की सैनिक कमजोरी उजागर हुई। भारत की आर्थिक प्रगति कमजोर हो गयी। चीन को दक्षिण पूर्वी दशिया में व्यापार बढ़ाने में सहायता मिली तथा चीन–पाकिस्तान धुरी, विकसित हुई।

चीन भारत के दो महत्वपूर्ण पड़ोसियों को हथियार आपूर्ति करता है– वे हैं पाकिस्तान तथा बांग्लादेश। बीजिंग इसके अलावे नेपाल व श्रीलंका को भी आपूर्ति करता है। रक्षा उत्पादों को लेकर चीन पाकिस्तान के साथ महत्वपूर्ण समझौते किया है जिसमें सैन्य तकनीकि का स्थानान्तरण भी समिलित है। चीन के द्वारा सैन्य विषयों की 2 बिलियन डालर की आपूर्ति म्यांमार को की गयी है जिससे चीन की गतिविधियों को देखकर भारत को चिन्ता बनी हुयी है। चीन के ऐसे कृत्यों को देखकर बहुत सारे भारतीय बुद्धिजीवी मानते हैं कि चीन ने 'अभी खेलों, बाद में लड़ेंगे', की नीति को अपनाया है। इस नीति के आधार पर चीन ने दक्षिण चीन सागर में आक्रामक विस्तार किया है जिसको शांतिपूण्र सहयोग की अवधि का नाम दिया गया है। बीजिंग भारत के साथ शांति, ग्रोथ व व्यापार को बढ़ावा दे रहा है परन्तु वास्तव में वह अपनी आर्थिक तथा सैन्य ताकत को बढ़ा रहा है परन्तु वास्तव में वह अपनी आर्थिक तथा सैन्य ताकत को बढ़ा रहा है। 1980 के दशक के मध्य से ही चीन भारत के साथ संबंधों में सुधार करने लगा। इस संबंध सुधार का लाभ उसे यह मिला कि वह भारत की सीमाओं के आसपास अपने सैन्य सुविधा के लिए लम्बी सड़कों का जाल बिछा लिया। 74 दिनों की लम्बी डोकलाम घटना भूटान, भारत तथा चीन को एक त्रिस्तरीय मोर्चे पर खड़ा कर दिया, जिसमें, भारत चीन के बी0आर0आई0 परियोजना के प्रभाव का सामना किया।

चीन के परिप्रेक्ष्य में भारत ने भी सैन्य टुकड़ियों को नियोजित करने के बारे में अपनी नीतियों में बदलाव किया है। 'कूटनीति' के दायरे से बाहर आकर भारत ने अपनी सेनाओं को सीमा पर चौकस रहने के प्रति ध्यान केन्द्रित किया है ताकि जिनपिंग की आक्रामक नीतियों का मुकाबला किया जा सकें। वैसे भी चीन के लिए आर्थिक संप्रभुता या आर्थिक साम्राज्य का प्रसार सर्वथा महत्वपूर्ण है तॉकि

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

वो अपने सैन्य विस्तार के मंसूबे को गति दे सकें। लेकिन आज जिस तरीके से पड़ोसी देशों के राजनीतिक परिवेश में बदलाव दिखाई दे रहे हैं उससे हर कोई देश अब मुद्दों को अलग नजरिए से देख रहा है, या फिर देखने पर मजबूर होगा। भूटान और नेपाल में परस्पर सुदीर्घ सांस्कृतिक एवम् राजनीतिक संबद्धताएं भारत के साथ जुड़ी है। इसलिए चीन के लिए यही बेहतर है कि या तो वो समझौते के अनुसार अन्यान्य देशों के साथ संबंधों का निर्वहन करें। अन्यथा की परिस्थिति में चीन को नेपाल में हिंदू राष्ट्रवाद के साथ निपटना होगा।

नयी दिल्ली को यह ध्यान देना चाहिए कि चीन न केवल अपने व्यापारिक विस्तार, भारतीय बाजार पर कब्जा, सस्ते सामानों का उत्पाद, भारत के साथ आर्थिक गतिविधियों में संलग्नता पर ध्यान दे रहा है बल्कि वह पाकिस्तान के सैन्य क्षमता को भी बढ़ा रहा है।

1. साहित्यिक अवलोकन (Review of Literature)– सुरेश चंद्रा, भारत–चीन सम्बन्ध वर्तमान मुद्दे और परिप्रेक्ष्य, अल्फा संस्करण (2016)– हाल के वर्षों में, भारत–चीन सम्बन्धों ने अपने विकास में एक अच्छी गति बनाए रखी है, जिसमें सहयोग प्रमुख कारक हैं दोनों पक्षों ने अपने आपसी राजनीतिक विश्वास के स्तर पर जारी रखने और द्विपक्षीय सहयोग के गहन विकास को बढ़ावा देने की मांग की है। वर्तमान स्थिति बताती हैं कि दोनों देशों के बीच सहकारिता मुख्य रूप से आर्थिक क्षेत्रों पर केन्द्रितर ही हैं। हालांकि राजनीति सीमा वार्ता और गैर, पारंपरिक सुरक्षा के क्षेत्रों में व्यावहारिक सहयोग को भी धीरे–धीरे बढ़ावा दिया गया है। कुछ समय पहले तक जापान और पश्चिमी की और इस चीनी दृष्टिकोण ने कुछ भारतीय विचारकों द्वारा दिखाए गए चीन के साथ पूर्वाग्रह विपरीत था। **अरूण, शौरी, भारत–चीन सम्बन्ध, प्रभात संकरण (1 जनवरी 2011)–** हिन्दी चीनी भाई–भाई का नारा लगाते हुए भी सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया इसके बाद भी चीन भारत के कई क्षेत्रों में लगातार अतिक्रमण करता रहा है। चीन के प्रति आत्मसमर्पण की स्थिति हमारी नीतियों के कारण ही है। चीन के अतिक्रमण के लिए केवल सरकारी नीतियाँ ही जिम्मेदार नहीं है, अपितु इसके लिए अन्य कारक भी उत्तरदाई रहे है जैसे हमारे देश की पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई राजनीतिक व्यवस्था, सरकारी निकायों की अत्यधिक दुर्गति, जिसके कारण इनकी क्षमता खत्म होती रही है लोगों ने भौतिक दुःखों के प्रति आकर्षण मीडिया और उसकी 'जीवन शैली पत्रकारिता' द्वारा उत्पन्न किया जाता है।

बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत–चीन सम्बन्धों का अध्ययन–डॉ. (कु0) अमिता चौधरी, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली– भारत व चीन दोनों ही विश्व के विस्तृत भू–भाग व विशाल जनसंख्या वाले देश होने के कारण इनकी विदेश नीति का विश्व व एशिया की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इन दोनों राष्ट्रें के मध्य प्राचीन समय से ही आपसी सम्बन्ध रहे हैं, जो दोनों राष्ट्रों के मध्य स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय पश्चात् तक यथा स्थिर बने रहे। लेकिन चीन द्वारा साम्राज्यवाद की नीति को प्रमुखता देते हुए तिब्बत पर अधिकार करने व मैक महोन रेखा को मानने से इंकार के पश्चात् दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों में खटास आनी प्रारम्भ हो गई, जिसके परिणाम स्वरूप 1962 में दोनों राष्ट्रों के मध्य युद्ध हुआ जिससे सम्बन्ध और अधिक खराब हो गये, जिनकी पुनः मधुर शुरूआत 1988 में श्री राजीव गांधी की चीन यात्रा के पश्चात् प्रारम्भ हो सकी। बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत चीन सम्बन्धों का अध्ययन अति आवश्यक है क्योंकि यह दोनों ही राष्ट्र एशिया के शक्तिशाली व प्रभावशाली राष्ट्र है। इनके आपसी सम्बन्धों का सीधा असर एशिया व विश्व को प्रभावित करता है। इन दोनों देशों के सम्बन्धों में समय–समय पर उतार–चढ़ाव आते रहे हैं, क्योंकि जहाँ एक ओर 1954 में हिन्दी चीनी भाई–भाई के नारे गुंजे वहीं दूसरी ओर 1962 में युद्ध बिगुल बजे" वर्तमान समय में दोनों ही राष्ट्र विश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्था हैं जो यदि मजबूती से एक साथ आ जाये तो विश्व को प्रभावित कर सकते हैं अतः इस प्रकार वर्तमान समय में दोनों राष्ट्र एक–दूसरे के लिए महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ विश्व पटल पर भी विशेष स्थान बनाये हुये हैं। अतः इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य में "बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में भारत चीन सम्बन्धों का अध्ययन" के विभिन्न आयामों का विवेचन किया गया है।

पवन कुमार सिंह– भारत , खुली सीमाएं–सुलगते राज्य उखड़े पड़ोसी, एम. एन. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली– भारत की लंबी–चौड़ी अंतर्राष्ट्रीय सीमा है और उस सीमा से सटे हुए ऐसे पड़ोसी हैं जो कभी भी हमारे लिए खतरा बन सकते हैं। चीन, पाकिस्तान तो हमारे लिए चुनौती थे ही अब बांग्लादेश जिसे हिन्दुस्तानी फौजों ने अपने खून से सींचा वह भी अब एक नई तालिबानी फौज तैयार कर रहा है। चीन लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक अपना दावा ठोंक रहा है। अमेरिका जैसा मतलब परस्त मुल्क पाकिस्तान की पीठ पर हाथ रखे हुए है। जिस नेपाल को भारत नमक से लेकर कैरोसिन तक मुहैया कराता हो, सड़कें और अस्पतालों तक की सुविधाएं प्रदान कराता हो वहीं के लोग हिन्दुस्तान के प्रति अपना नजरिया दूषित किए हैं। नेपाल के तमाम अखबार भोर होते ही भारत को गालियां बकते हैं। नेपाल–भारत की हजारों किलोमीटर खुली सीमा आई.एस.आई. जैसी घटिया खुफिया एजेंसी के लिए वरदान बनी है। ऐसे महौल में हमें न केवल अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने की जरूरत है बल्कि आन्तरिक सुरक्षा पर भी नए सिरे से सोचने की जरूरत है। हमारी सैन्य तैयारियां अब चीन को दृष्टिगत रखते हुए हों तो ज्यादा बेहतर होगा।

2. शोध का महत्व– आज के वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भारत और चीन के बीच के रिश्ते अपनी पहचान और साख, प्रतिस्पर्धा, सहयोग और द्वंद के जरिए कायम किए हुए है, जो विभिन्न आयामों एवम् विधाओं में स्पष्टतः परिलक्षित है। यह पूरी तरह से जाहिर है कि चीन समूचे एशिया और खासतौर पर भारत के कंधे पर चढ़कर अपना रसूख पूरी दुनिया को जताना चाहता है। वैसे भी इन दोनों देशों के मध्य सीमा विवाद तो पहले से ही कायम है। इसके अलावे तिब्बत की समस्या, भारत का अमेरिका के तरफ बढ़ता झुकाव, गलवान घाटी में बढ़ती उलझनें एवम् अक्साई चीन के मसलों ने दोनों विशालकाय देशों के सामने चुनौतियां खड़ी की है। 'वास्तविक नियंत्रण रेखा' के इर्द गिर्द भारत के द्वारा परिसंरचनात्मक विकास तथा चीन के द्वारा 'चाइना–पाकिस्तान इकोनॉमिक कोरिडोर (जो पाकिस्तान को भी जोड़े हुए हैं) ने भी इन दोनों देशों के बीच रिश्तों का बेड़ा गर्क ही किया है।

अतः उपरोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान में "21वीं सदी में भारत की सुरक्षा पर चीन का बढ़ता प्रभाव" शोध विषय का चयन ही शोध के महत्व को परिलक्षित करता है।

3. शोध अध्ययन का उद्देश्य– भारत–चीन सीमा कई क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्र के साथ मध्य क्षेत्र प्रमुख तौर पर चर्चा में है जिसमें मध्य क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक शांतिप्रद है। यदि पश्चिमी क्षेत्र की चर्चा करें तो भारत का आरोप है कि चीन ने कश्मीर के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया है। इसके अतिरिक्त सन् 1963 में पाकिस्तान ने भी एक हिस्सा चीन को सौप दिया। इसके ठीक समीप अक्साई चीन इलाका है जो लद्दाख का एक हिस्सा है, लेकिन इसे आजकल जिजियांग के रूप में जाना जाता है। पूर्वी क्षेत्र की बात करें तो चीन का यह कहना है कि लगभग 90,000 वर्ग किलोमीटर का इलाका अरूणांचल प्रदेश के प्रक्षेत्र में पड़ता है जो चीन का ही भौगोलिक हिस्सा है। इसके अलावे चीन मैकमोहन रेखा से भी इत्तेफाक नहीं रखता है। सिक्किम के ऊपर भी सवालिया निशान लगाने से चीन बाज नहीं आता है और इसके भारत में विलय की प्रस्थिति को भी हमेशा शक की नजर से देखा जाता रहा है। चीन सिक्किम के मुद्दे को तुरुप के पत्ते की तरह इस्तेमाल करना चाहता है क्योंकि उसे पूरा इल्म है कि यदि उसने सिक्किम का राग छेड़ा, तो भारत भी तिब्बत का सवाल उठाएगा। सन् 2005 में जब वेन जियाबाओ ने भारत की यात्रा की तो उन्हें एक ऐसा मानचित्र उपहार स्वरूप भेंट किया गया जिसमें सिक्किम को भारत के हिस्से के रूप में प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावे ऐसे कई एक मुद्दे हैं जो भारत और चीन के पारस्परिक रिश्तों में खलल पैदा करते हैं और इन्हें नकारा भी नहीं जा सकता है। इन प्रारंभिक अनसुलझे मुद्दों में– भारत और चीन के बीच विवादित सीमाएं, सीमाओं पर आए दिन झड़प, गतिरोध एवम् टकराव, भारतीय प्रशांत क्षेत्र के बारे में अमेरिकी सोच में बदलाव जो चीन की बेचैनी का सबब भी है एवम् अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भिन्नताएं (जो मसूद अजहर के विषयों को भी समेटे हुए है) है। इसके अतिरिक्त दलाई लामा और उनकी भारत में उपस्थिति तथा चीन के द्वारा जल के बंटवारे में पारदर्शिता का अभाव भी ऐसे विषय है जो मेरे शोध के उद्देश्य है।

1. अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत और चीन के सम्बन्धों का विश्लेषण करना है।
2. भारत–चीन सम्बन्धों में सीमा समस्या का अध्ययन करना।
3. भारत–चीन सम्बन्धों के उतार–चढ़ाव को देखकर भारत की सुरक्षा आर्थिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. एशियाई देशों में भारत की महत्वपूर्ण अवस्थिति का अध्ययन करना हैं।
5. वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में चीन द्वारा भारत की रणनीतिक घेरेबन्दी का अध्ययन करना।

4. परिकल्पना (Hypothesis)– प्रस्तावित अध्ययन की परिकल्पना निम्न हैं :–

1. चीन द्वारा दक्षिण एशियाई राष्ट्रों को आर्थिक, सामरिक सुरक्षा भारत के सुरक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है।
2. चीन का महाशक्ति बनने की महत्वाकांक्षा तथा भारत के साथ तनाव भारत–पाक सम्बन्धों को बहुत प्रभावित करना है।
3. भारत और चीन के सम्बन्ध के बदलते आयाम से आगे सम्बन्ध को निकट लाना बहुत चुनौतीपूर्ण है।
4. पाक को चीन का समर्थन मिलना, भारत–पाक के आपसी विवाद में शांति के लिए बहुत बड़ा खतरा तथा भारत की बाह्य तथा आंतरिक सुरक्षा समस्याओं को विस्तृत कर रहे हैं।

5. शोध विधि (Research Metodology)–

1. प्रस्तावित अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित होगा।
2. प्रस्तावित शोध कार्य में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. द्वितीय आंकड़ों का संकलन समस्या से सम्बन्धित पुस्तकों, इंटरनेट, शोध पत्रों, शोध पत्रिकाओं, अप्रकाशित शोध ग्रंथों एवं सरकार द्वारा जारी वार्षिक रिपोर्टों आदि से किया जायेगा।

निष्कर्ष एवं सुझाव– भारत–चीन सम्बन्ध के अनुसार चीन के वैश्विक, आर्थिक व रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं एवं उत्तरदायित्व के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित बिन्दु बहुत ही महत्वपूर्ण हैं–

1. विश्व के परवाह किये बिना आज चीन शांति व विकास को आधार तत्व मानकर चीन अपने स्त्राजातिक दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु अभिप्रेरित हुआ।
2. चीन वर्तमान में सबसे पहले अपने राष्ट्रीय शक्ति तथा इसके लिए आवश्यक आर्थिक शक्ति को सुदृढ़ता प्राप्त करने के लिए अनेक कदम उठा रहा है।
3. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को मजबूत बनाने तथा एशिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए चीन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति एव अर्थव्यवस्था को समर्थन देना चाहता है।
4. चीन विश्व में अधिकांश राष्ट्र के साथ अपने सम्बन्धों को सुधार रहा है।
5. चीन की विस्तारवाद की नीति भारत के लिए खतरे की घण्टी है तथा चीन आर्थिक क्षेत्र में बहुत ही तीव्र गति से विकास कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Appadorai & M.S. Rajan : India's Foreign Policy and Relations, South Asian Publcations, New Delhi, 1985.
2. Bimal Kumar : India's & China Strategic Energy Management and security, manas Publcations, New Delhi, 2009.

3. Bhawna Pokharna : India-china Relations: Dimensions and Perspectives, NCP, New Delhi, 2009.
4. B.M.Chengappa : India-China Relations: post confict Phase of Post coldwar Period, APM Publishing cor poration, New Delhi, 2004.
5. C.V. Ranganathan : Pancheel and the future Perspectives on Indiachina Relations, Samskriti Press, New Delhi, 2005.
6. Deepak B. R : India-China Relations: In the first Half of the 20th Century, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2001.
7. Girilal Jian : India meets china In Nepal, Asia publishing House Bombay,1959.
8. Harsh Bhasin : The Big Three: the Emergeing Relationship Between US, India and china in the Changing World order, Academic Foundation, new Delhi,2009.
9. Jaswant Singh Marwah : India's Quest : Leadership of Powerful Nation, manas Publictions New Delhi, 2008.
10. K.K. Singh : Maritime Security for India: new Challenges and Respones, N.C.P. New Delhi, 2008.
11. Mohan B. Pillai & L. Premashekaria : Foreign Policy of India: Continuity and Change, N. C. P. New Delhi, 2010.
12. P.M. Kamath : India china Relations : An Agenda For Asian century, Gyan Publishing Houes, New Delhi, 2011.
13. Prem Shankar Jha, china-India Relation under Modi, Playing with fire, "China Report 53, No.2 (2017).
14. "The Reality of the India-China Strategic Dialogue" Live mint. 24 February 2017.
15. V.N. Arora : New Dimensions of Security in south Asia: Diagnosis and Prognosis, Mohit Publication, New Delhi, 2012.

*****